अनुबोधन, खण्ड 1, अंक 1, मार्च 2025, पृष्ठ 35–39
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
प्रकाशित: 31 मार्च 2025
जर्नल वेबसाइट: https://anubodhan.org

आधुनिक विज्ञान और उपनिषदों में द्वैत एवं अद्वैत

डॉ० सन्तोष कुमार*

सारांश

आधुनिक विज्ञान ने जब अपनी जीवन यात्रा शुरू की थी तो उसका एक ही शत्रु था धर्म। विज्ञान ने धार्मिक मत–मतान्तरों और अंध–विश्वासों के प्रति छोटी–छोटी लडाईयाँ लड़ी। आधुनिक विज्ञान ने भी अज्ञान की ज्ञान विरोधी ताकतों से हठपूर्वक युद्ध लडा है। ज्ञान को समर्पित विज्ञान की इस हठ–यात्रा में अनेक पड़ाव आये है, जिन्हें इतिहास के पन्नों ने छुपाकर रखा है। विज्ञान निरन्तर सत्य के समीप जाने का प्रयत्न करता है। आम आदमी अक्सर यह समझ लेता है कि आधुनिक विज्ञान और धर्म से सम्बन्धित धारणाओं में एक स्वभाविक विरोध है। इस समझ का एक सुदृढ़ इतिहास भी रहा है। यह विरोध बहुत दिनों तक धर्मशास्त्रियों और विज्ञान वैज्ञानिकों के बीच बहस का विषय बना रहा।

बीज शब्दः *विज्ञान, दर्शन,* उपनिषद, द्वैत, अद्वैत,

समाजशास्त्रियों ने भी पिछली सदी में इस पर खासी बहस की है। क्योंकि मानव जाति की नियति अब किसी विचारक के चिन्तन का विषय नहीं रह गई है। वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्नता के आयाम पहले पाश्चात्य विज्ञानवादी ही तप करते थे और विज्ञान का विशिष्ट उद्देश्य था "मिथ" की आलोचना और उसका खंडन। इधर डेढ़ से दो सौ वर्षों के भीतर जीवन और उसमें अन्तर्निहित सत्य के विषय में बहुत से मिथ टूटे है, यह लगातार होता रहा है कि मनुष्य बहुत से मिथ को सत्य मानकर वर्षो उसला पृष्ठ पोषण करता रहा है। फिर एक दूसरा सत्य सामने आता है जो यह बताता है कि अब तक जिसे सत्य माना जा रहा था था, वह वस्तुतः अर्ध–सत्य था। प्रकृति ने अपने गर्भ में अनेक रहस्यों को छिपा रखा है। नये तथ्यों का पता चलने पर पुराने तथ्य भिन्न हो जाते हैं। मिथ का जन्म ही ऐसे विचारों से होता है जो अर्ध–सत्य को सत्य की भाँति प्रकट करना चाहते हैं और यह मिथ भी तब तक (जब तक सत्य प्रकट नहीं होता) मानवीय जीवन भें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहता है। "आधुनिक विज्ञान की आयु लगभग चार सौ वर्षों की है।

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर (दर्शनशास्त्र), द्रौपदी देवी विन्ध्याचल महाविद्यालय, सिंहोरवाँ अहिरौली, गोरखपुर

कॉपरनिकस की कृति "आकाशीय सत्ताओं की क्रान्ति" 1543 ई. में प्रकाशित हुई। इसके पहले टोलमी का भू–केन्द्रीय खगोल सिद्धान्त चल रहा था। "जब कॉपरनिकस का सूर्य केन्द्रीय खगोल सिद्धांत आया तो टोलमी का सिद्धांत मिथ बन गया।" एन ० डी० व्हाइट ने अपनी पुस्तक में इस तथ्य को जोर देकर कहा कि "मिथ" की रचना सिर्फ धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं करते, मिथ की रचना वैज्ञानिक भी करते हैं। न्यूटन समर्थित भौतिकवादी ने इस मिथ की रचना की कि "आकाश तत्व और समय दोनों पर परम (Absolute) है, यह मिथ सत्य के रूप में बहुत दिनों तक चला, जब तक आइन्सटीन (1905) ने अपनी 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' से इस तथ्य मिथ से आवरण नहीं हटा दिया।" 19वीं सदी में डार्विन के विकासवाद की भी यही परिणिति हुई। डार्विन ने विकासवाद के सिद्धांत, प्राकृतिक चयन का सिद्धांत तथा सर्वोत्तम की उत्तरजीविता के सिद्धांत जब अपना दम तोडने लगे तो डार्विन के समर्थकों ने 'इवोल्यून ऑफ रेन्डम' तथा 'चांस एण्ड नेसेसिटी' की भित्ति खडी की। ये नव–डार्विनवादी तो ईश्वरवाद के विरोध में डिजाइन विदाउट डिजाइनर तक चले गये। 20वीं सदी के मध्य तक यह तथ्य भी खूब चला। वैज्ञानिकों ने इसे अंतिम सत्य मान लिया। पर बीसवीं सदी के मध्य तक फंड होएल जैसे वरिष्ठ वैज्ञानिक ने इसकी हवा निकाल दी। एक बेबाक टिप्पणी में कहा कि "Darwinism as being as believing that a gust of wind drew over a pile of metal scrap and turned it into a Jumbo Jet."

डार्विन के बाद दो खोजों ने तो डार्विन के विकासवाद की चूलें ही हिला दी। पहली तो डी.एन.ए. की खोज और दूसरी डार्क मैटर की खोज। डी.एन.ए. ने बताया कि सभी चीजें सभी जैविक व्यवहार, यहाँ तक कि हमारा रंग और नाक का आकार सभी कुछ पूर्व निर्धारित है हम लोग पूर्व निर्धारित रोबोट से अधिक कुछ नहीं है। इस डी.एन.ए. ने न सिर्फ भिन्न प्रजातियों को निर्मित किया वरन् उनमें सुविचारित विभिन्नताएँ भी पैदा की। इसने विकासवाद के इस सिद्धांत का भी खंडन किया कि मनुष्य इस धरती का सर्वश्रेष्ठ जीव है। मनुष्य अन्य जानवरों के मुकाबले विचार शक्ति में जरूर आगे है पर उसके देखने, सुनने की शक्ति दूसरे जानवरों की तुलना भी बहुत कम है। एक बाज के देखने की शक्ति मनुष्य की तुलना में कई गुणी है, साल्मन मछली जिसके

सुनने और संचार की शक्ति इतनी है कि मनुष्य इनकी तुलना में लगभग अंधा और बहरा है। दूसरी खोज है डार्क मैटर की, Baryonic Matter की जिसने इस तथ्य को संपुष्ट किया कि सम्पूर्ण ब्रहमांड का निर्माण करने वाला पदार्थ एक ही है। "डार्क मैटर" की खोज के बाद यह प्रश्न विशिष्टता से पूछा जाने लगा कि वह कौन सा एक पदार्थ है जिससे यह संपूर्ण ब्रहमांड निर्मित है, वह पदार्थ है भी या नहीं? डार्विन, उनके अनुयायियों और उनके बाद के अनेक यह कहें ज्यादातर वैज्ञानिकों ने माना कि वह अंतिम वस्तु पदार्थ ही है और पूरी दुनिया पदार्थ से ही निर्मित है।

औपनिषदीय ऋषि (शायद दुनिया के) पहले थे जो इस पदार्थ से परे गये। उन्होंने इसके परे जाकर चित् (चेतना) को इस भौतिक जगत् के पीछे मूल शक्ति बताया। याज्ञवल्क्य शायद पहले थे जिन्होंने इस पदार्थ की सीमा पार की। उन्होंने पदार्थ के द्वैत की स्थापना दी और इसके पार अद्वैत तक गये। इस औपनिषदीय विचारक के पास न तो सुपर कम्प्यूटर था और न सुविधापूर्ण प्रयोगशालायें थीं। उनके पास विचार की शक्ति (अथवा ध्यान की शक्ति) ही थी। याज्ञवल्क्य पहले विचारक थे जिन्होंने यह माना कि यह जीवन द्वैत का परिणाम है, द्वैत से संचालित होता है पर हमारा लक्ष्य अद्वैत है, इस अद्वैत तक पहुँचने वाला रास्ता द्वैत से होकर जाता है। बिना द्वैत के मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, वह न तो देख सकता है, न सुन सकता है। इसे याज्ञवल्क्य ने कई उदाहरणों से सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने एक वाक्य में इसे स्थापित किया "यत्र द्वैतम् इव भावति तत् इतरः इतरं पश्यति।" अर्थात जब तक यह द्वैत है तभी एक दूसरे को देखता है।

यह संसार (पृथ्वी का जीवन) प्रत्यक्ष बोध की प्रक्रिया है। हमारा प्रत्यक्ष बोध द्वैत पर आधारित है। विषय और वस्तु के द्वैत पर। आँख दीवार को देख रही है क्योंकि इसके देखने की शक्ति सीमित है। अगर यह शक्ति असीमित होती तो हम दीवार के पार देख सकते। दीवार, दृष्टि को रोक रही है इसलिए कि दीवार और द्रष्टा दो है। अगर एक होते तो दृष्टि दीवार द्वारा बाधित न हो सकती। याज्ञवल्क्य कहते हैं कि जब यह द्वैधता मिट जाती है तो शुद्ध चेतना रह जाती है और वास्तविक एकत्व का निदर्शन होता है।

प्रत्यक्ष बोध के लिए जो सत्य है वही दूसरे इंन्द्रियों के लिए भी सत्य है जैसे देखने, सूँघने, छूने आदि के लिए भी। तब (जनक एक प्रश्न करते हैं)। इस

द्वैत का अविष्कार प्रकृति ने क्यों किया जबकि हमारा लक्ष्य अद्वैत है। उत्तर मिला, क्योंकि प्रकृति इस द्वैत के द्वारा जीवन का समायोजन चाहती थी, हम लोग सीमितता और द्वैत में ही जीवित रह सकते हैं। उपनिषदों में अन्यत्र यह उल्लेख है कि "जो अद्वैत (ब्रह्म) को जान जाता है फिर उसका अस्तित्व इसी में विलीन हो जाता है।" आधुनिक विज्ञान इन तथ्य को पूर्ण समर्थन करता है। उदाहरण है अंतरिक्ष का। अंतरिक्ष में सूर्य की उपस्थिति के बावजूद अंधेरा है क्योंकि वहाँ प्रकाश को परावर्तित करने वाले पार्टिकल्स मौजूद नहीं है। एक दूसरे की आवाज सुनने के लिए कंपन उत्पन्न करने वाला वातावरण नहीं है, द्वैत नहीं है, अतः जीवन नहीं है।

याज्ञवल्यक्य यहीं नही रूकते, वे कहते हैं यह द्वैत सत्य नहीं है (आधुनिक पाश्चात्य भौतिकी मानता है कि यह पदार्थ और उसमें अन्तर्निहित उर्जा ही अंतिम सत्य है)। यह सत्य की प्रतिच्छाया (Shadow) है। सत्य एक है और इसके टुकडे होते ही यह द्वैत के रूप में दिखता है। याज्ञवल्क्य इसके लिए एक शब्द 'इव' (मानो) का प्रयोग करते हैं। वे कहते हैं संसार में द्वैधता है। वह दिखावटी है, इसके अन्तस्थ में अद्वैत है। वह अनंत है, सीमाहीन है, ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या। यहाँ मिथ्या का अर्थ अस्तित्वहीनता नहीं बल्कि इसका अर्थ है, यह सत्य नहीं है, आँखों का धोखा है।

ब्रह्म के कई पर्यायवाची हैं, एकम्, अद्वितीयम् सत्, अनादि, अनंत, निर्गुण, चित् आदि। ब्रह्म चेतना का समुच्चय है, वह कोई स्त्री या पुरुष नहीं है। उपनिषदों की इस स्थापना और भौतिक विज्ञान की आधुनिक स्थापनाओं में समानता है। डार्क मैटर की अवधारणा कहती हैं "Baryonic Matter ही मूल पदार्थ है। हम लोग सभी Baryonic Matter से ही घिरे है इस धरती पर Baryonic Matter में द्वैत होना है प्रोटॉन और इलेक्ट्रान, जो जीवन का कारण होता है।" इसी कारण टाइम और स्पेश Subject और Object हैं, उपर, नीचे, अम्ल और क्षार है, कार्य है कारण है शून्य है और सीमाहीनता है।

द्वैत से जीवन तो है पर इसी से असमानता भी है। असमानता से अस्थिरता होती है। अस्थिरता से संघर्ष और संघर्ष की परिणिति होती है विनाश में। जबकि हमारे आदर्श समानता, स्थिरता, एकता और संघर्ष विहिनता है।

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है कि आधुनिक विज्ञान ने जो नवीनतम् शोध की है उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि विज्ञान और उपनिषद दोनों एक ही विन्दु पर पहुँच रहे हैं। पदार्थ का विश्लेषण करते समय आधुनिक विज्ञान इस निर्णय पर पहुँचता है कि समस्त जगत "विद्युत ऊर्जा" का एक विस्तार है। इस सर्वव्यापी विद्युत ऊर्जा का न आदि है, न अन्त। यह ऊर्जा स्थायी है, सर्वकालिक है, शाष्वत है।

आधुनिक विज्ञान जिस ऊर्जा को विद्युत के रूप में जानता है, उपनिषद् उसी ऊर्जा को ब्रह्म (अद्वैत) कहकर संबोधित करता है। उपनिषद कहता है कि सब कुछ अद्वैत ब्रह्म का ही रूप है। उपनिषद और विज्ञान दोनो इस बात पर एकमत दिखाई दे रहे हैं कि जो कुछ भी हमारे सम्पर्क में आता है वह "अद्वैत" का ही विस्तार है।

संदर्भ

1. ए. एन. व्हाइट डेड – साहस एण्ड माडर्न वर्ल्ड, पृष्ठ सं0 123–124।
2. स्वामी बुद्धानन्द – विज्ञान और आध्यात्मिकता, पृष्ठ सं0 27।
3. एण्ड डी0 व्हाइट : ए हिस्ट्री ऑफ द वारफेयर ऑफ साइन्स विद थ्योलॉजी इन क्रिष्चियनिटी (उद्धृत स्वामी बुद्धानन्द कृत विज्ञान और आध्यात्मिकता) पृष्ठ सं0 11।
4. फ्रेड होएल : फेस द फैक्ट, पृष्ठ सं0 57।
5. बृहदारण्यकोपनिषद्, श्लोक सं0 4: 24–25।
6. ईशोपनिषद्, श्लोक सं0 14।
7 Google information on Baryonic Matter and Dark Matter.

Copyright © 2025 Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License (CC BY-NC-ND 4.0).